

2, 13. TRIK. 3, 3, 414. H. 1139. a. n. 3, 699. MED. v. 37. eine weissblühende Species (खेतलोध) SVĀMIN zu AK. im ÇKDR. eine Art Ebenholz (केन्दुक) ÇABDAK. im ÇKDR. — 2) N. pr. eines alten Weisen und Lehrers, nach dem HARIV. ein Sohn, nach dem MBH. ein Schüler Viçvāmītra's, TRIK. H. a. n. MED. BḤ. ĀB. UP. 2, 6, 3. 4, 6, 3. Ind. St. 3, 273. Grammatiker NIB. 4, 3. P. 6, 3, 61. 7, 1, 74. 3, 99. 8, 4, 67. — MBH. 1, 331. 2, 110. 292. 3, 8263. 5, 3720. fgg. 9, 2992. 12, 10555. fgg. 13, 251. 1349. fgg. HARIV. 434. सखा स गालवो यस्य (ब्रह्मदत्तस्य) योगार्थो महायशाः । शिनामुत्पाद्य तयसा क्रमो येन प्रवर्तितः ॥ 1049. 1462. 1769. ÇĀK. 112, 14 (Schüler Kaçjapa's). VIKR. 33, 2 (Schüler Bharata's). VP. 281, N. 5. BḤ. P. 8, 13, 15. MĀR. P. 20, 12. pl. seine Nachkommen HARIV. 1467.

गालवि patron. von गालव MBH. 9, 2995.

गालि f. Verwünschung TRIK. 3, 2, 9. H. 272. ददति ददतु गालीर्गालिमन्तो भवन्तो वयमपि तद्भावद्गालिदाने ऽसमर्थाः BHART. 3, 99; vgl. Verz. d. B. H. 31, N.

गालिनी f. eine best. Verbindung der Finger: कनिष्ठाङ्गुष्ठकौ सक्ते करयोऽतिरेतरम् । तर्जनी मध्यमानामासंरुता भुववर्जिता ॥ मुद्गेषा गालिनी प्रोक्ता शङ्खस्योपरि चलिता । TANTRASĀRA im ÇKDR.

गालिमन् (von गालि) adj. Verwünschungen in Munde führend BHART. 3, 99 (s. u. गालि).

गालोडित und गालोडय्, गालोडयति = गालोडितमाचष्टे VOP. 21, 15. गालोडितं वाचाम् = विमर्शः Prüfung, गालोडयते prüfen DHĀTUP. 33, 86.

गालोड्य n. Lotussamen RĪĀN. im ÇKDR. — Vgl. अङ्गलोड्य, अङ्गलोड्य, गलोड्य, गिलोड्य.

गावल्गणि (von गवल्गण) patron. des Saṅgaja MBH. 1, 220. 245. 615. 2, 2709. 3, 674. 13, 444. BḤ. P. 1, 13, 30.

गौविष्ठिर patron. von गविष्ठिर gaṇa विदादि zu P. 4, 1, 105. ĀÇV. ÇĀ. 12, 14.

गविष्ठिरायणं patron. von गविष्ठिर gaṇa कृतितादि zu P. 4, 1, 100.

गावीधुक् adj. von गवीधुकः चरु TS. 1, 8, 3, 1. 9, 2. TB. 1, 7, 3, 6.

गावेधुक् adj. (f. ई) von गवेधुका gaṇa त्रिल्वदि zu P. 4, 3, 136. ÇĀT. B. 5, 2, 4, 11. 13. 3, 1, 10. 2, 7. KĀT. Ç. 1, 1, 12. 15, 1, 27. ÇĀKḤ. GRH. 3, 6.

गौवेश von गवेश v. l. im gaṇa संकलादि zu P. 4, 2, 75.

गौवेश von गवेश gaṇa संकलादि zu P. 4, 2, 75.

गाक्ष, गाक्षते (विलोडने) DHĀTUP. 16, 48. ep. auch गाक्षति; अगाक्षे; गाक्षिष्ये; गाक्षिता und गाक्ष P. 7, 2, 44, Sch. 8, 3, 13, Sch.; अगाक्षिष्ठ (BHĀTT. 13, 59), अगाक्ष ebend.; गाक्षितुम्; गाक्षित und गाक्ष. 1) sich tauchen in, baden in, eindringen in, sich hineinbegeben in; sich vertiefen in; mit dem acc.: प्रतीपं गाक्षमानः KAUC. 26. PĀNĀV. Br. 14, 8. 13, 2 (s. u. गाध). तेयम् MBH. 3, 17314. तीर्थानि R. 3, 76, 33. गाक्षतो मक्षिषा निपानसलिलम् ÇĀK. 93. BHĀTT. 14, 67. 22, 11. अगाक्षतो ततो वनम् R. 2, 52, 95. RAGH. 2, 14. PĀNĀT. II, 128. 229, 14. गाक्षमानमनीकानि MBH. 7, 1742. गाक्षति दुर्विगाक्षां याम्यां सभाम् MBH. 13, 3795. ब्रह्मावर्तं जनपदमधृक्कायया गाक्षमानः (मेघः) MEGH. 49. अगाक्षे च दिशो दश BHĀTT. 14, 104. घ्याम् 3, 94. 6, 57. अयथानि गाक्षते मूढः P. 2, 4, 30, Sch. बलानि अगाक्षिरे ऽनेकमुखानि मार्गान् BHĀTT. 2, 54. मनस्तु मे संशयमेव गाक्षते KUMĀRAS. 5, 46. — 2) sich verstecken: यदस्येत्यं रथगन्तो गाक्षते (nach SĀ. = 1) AIT. BR. 3, 48. —

partic. गाक्षित mit act. Bed.: न तु शक्वाः क्षयं नेतुं समुद्राश्रयगाक्षिते (lies: ०गाक्षितैः) von ihnen, die sich getaucht haben in MBH. 3, 8772. गाठ s. bes. — Vgl. गाध्.

— अति auftauchen, sich über Etwas halten; sich erheben über: वि-श्वा उत बयां व्यं धारा उद्व्या इव । अति गाक्षित् द्विषः RV. 2, 7, 3. पवित्रमति गाक्षते 9, 67, 20. इन्द्रः पुनानो अति गाक्षते मृधः 86, 26.

— अभि eindringen in (acc.): अभि गोत्राणि सक्ष्मा गाक्षमानः RV. 10, 103, 7.

— अघ oder च sich tauchen in, baden in, eindringen in, sich hineinbegeben in; sich vertiefen in; mit dem loc. oder acc.: क्रूरे Gobh. 4, 5. 22. ÇĀKḤ. GRH. 4, 9. SUÇR. 2, 182, 16. अस्यां नयाम् — अघगाक्षताम् (pass. impers.): MBH. 3, 8649. स्वप्ने ऽघगाक्षते ऽत्यर्थं जलम् JĪGŪ. 1, 271.

अघगाक्ष जलम् MBH. 3, 164. 10697. R. 1, 2, 8. 10. 2, 27, 18. 69, 10. 3, 22. 29. 75, 7. SUÇR. 1, 170, 17. PĀNĀT. 159, 24. तीर्थं चाप्यघगाक्षताम् (partic. act.) R. 2, 89, 16. अयारमपरिभ्रातः सो ऽघगाक्षन्नभःसरः 5, 58, 4. (हिमालयः) पूर्वापरौ वारिनिधी वगाक्ष KUMĀRAS. 1, 1. यावद्व्यमवकाशमवगाक्षिष्ये VIKR. 62, 15. अघगाक्षते च शल्यम् (subj.) SUÇR. 1, 26, 7. गिरिम् BHĀTT. 6, 29. दिशः 16, 38. वनम् DAÇAK. in BḤ. Chr. 189, 6. अभिपततो ऽपि नागिरिकयुरुषानशङ्कमेवावगाक्ष 194, 11. मङ्गलतूर्यघोषः । विमानप्रङ्गाप्य-वगाक्षमानः KUMĀRAS. 7, 40. संप्राप्य पण्डितः कच्छं प्रशामेवावगाक्षते (Gegens. शिलेवाम्भ स मञ्जति) R. 3, 68, 33. सातःकरणा बुद्धिः सर्वं विषयम-वगाक्षते यस्मात् SĀMḤJAK. 33. — partic. अघगाक्षित mit pass. Bed.: ग-ङ्गा MBH. 3, 8230. 13, 1321. Zu अघगाठ (s. d.) haben wir nachzutragen.

zu 1: समुद्रमवगाठानि पतनानि R. 4, 40, 28. जलावगाठस्य वनदीपस्य MĀKḤ. 44, 23. अघगाठः समुद्रस्य (sic) चक्रवानाम पर्वतः R. 4, 43, 33. सु-हूरमवगाठया । शन्या निर्भिनहृदयः 6, 80, 37; zu 2: (निम्नगाः) अघगाठा द्रुमातमैः MBH. 13, 3827. R. 5, 74, 30. रुरवृषस्कन्धावगाठद्रुम BHART. 1, 67. Eine u. अघगाठ nicht erwähnte Bed. verschunden haben wir in:

अघगाठा द्विपतो मे MBH. 4, 2238. Vgl. auch noch अघगाक्ष (gg. — caus. 1) sich eintauchen —, baden lassen: अघगाक्ष्य शीतास्वप्नु SUÇR. 2, 192. 11. — 2) sich eintauchen, baden: वारिकोष्ठे ऽवगाक्ष्येत् SUÇR. 2, 530, 11.

— व्यत्र sich tauchen in, eindringen in: गङ्गाम् MBH. 1, 7285. ततोप्यं व्यवगाठवान् 3, 17314. व्यवगाक्षद्वयानिकम् 4, 1984. einbrechen (von der Nacht): रजनौ व्यवगाक्षते 3, 16820.

— उद् auftauchen: ताः प्राच्य उज्जिगाक्षोरे (sic) KĀT. Ç. 13, 3, 20. — Vgl. उद्गाठ, औद्गाक्षमानि.

— उप eindringen in: सारथेर्बहुशशास्य पृतनामुपगाक्षतः (partic. act.) R. 6, 31, 39.

— प्र sich hineinmachen in, durchdringen: प्र यः पुत्राणि गाक्षते तन्-द्वेनैव शाचिषा RV. 1, 127, 4. — Vgl. प्रगाठ.

— अभिप्र sich einensenken in, sich vereinigen mit: वारिं अभि प्र गाक्षते RV. 9, 99, 2. 110, 2. — caus. eintauchen: एनमुदको ऽभिप्रगाक्ष्य ÇĀKḤ. Ç. 16, 18, 19.

— संप्र sich tauchen in, hineingehen in: यदार्णवं महावोरमल्लवः संप्र-गाक्षते MBH. 14, 1392.

— प्रति eindringen in, hineingehen in: प्रतिगाक्षते वनानि R. 3, 76, 34.

— वि sich tauchen in (acc. loc.), baden in, sich stecken in, eindrin- gen in, sich hineinbegeben in: अपो देवो वि गाक्षते RV. 9, 3, 6. 7. 2. 86.